Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT)
© VIJACT |Vol.2, Issue2, Feb 2026, pp. 23-29 | ISSN: 3139-1656 (Online)
DOI: https://doi.org/10.65785/vijact.v2i2.15
Available online at: https://vijact.com/

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचार एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक तुलनात्मक अध्ययन

सैयद अब्दुल वाहिद शाह [1] एवं प्रोफेसर (डा.) अनीता सिंह [2]

[1] शोध छात्र, बी. एड. विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली
[2] प्रोफेसर बी. एड. विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली

Article Info

Article history:
Received Feb 12, 2026
Accepted Feb 20, 2026
Published Feb 28, 2026

Keywords:
पंडित दीनदयाल उपाध्याय
शैक्षिक विचार
एकात्म मानववाद
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
तुलनात्मक अध्ययन

ABSTRACT

प्रस्तुत शोधपत्र बहुमुखी प्रतिभा के धनी पंडित दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों एवं भारत सरकार द्वारा 2020 में लायी गयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) के मध्य समानताओं एवं असमानताओं का विश्लेषण करने का एक सूक्ष्म प्रयास है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी भारतीय राजनीति के प्रमुख स्तम्भ होने के साथ ही साथ उच्च कोटि के विचारक, लेखक एवं दार्शनिक थे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित विषयों एवं समस्याओं पर अपने विचारों के माध्यम से भारतीयों एवं सम्पूर्ण विश्व को एक नई दिशा देने का प्रयास किया है, आपके विचार हमेशा प्रासंगिक थे, हैं और रहेंगे। आपके शैक्षिक एवं दार्शनिक विचार आपके राजनैतिक विचारों एवं कार्या जितने ही उच्च कोटि के रहे हैं इसका प्रमाण उनके द्वारा प्रतिपादित "एकात्म मानववाद" दार्शनिक विचारधारा में भारतमीय सभ्यता, संस्कृति, स्वदेशी चेतना, मानवीय मूल्य और नैतिकता का अनौखा समावेश है, जबकि राष्ट्रीय शिक्षा-2020 में शैक्षिक गुणवत्ता, भारतीय शैक्षिक परम्परा, बहुभाषिकता, समावेशिता, लचीलापन और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुकूल शिक्षा पर केन्द्रित है। यह अध्ययन उपरोक्त दृष्टिकोणों के बीच समानता एवं असमानता का अध्ययन करने का एक सूक्ष्म प्रयास है, जिसके माध्यम से यह ज्ञात किया जा सके कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक एवं दार्शनिक विचारों से राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 कितनी प्रभावित है। यह शोध पत्र पंडित उपाध्याय के शैक्षिक सिद्धांतों और नई शिक्षा नीति के प्रावधानों के मध्य मौजूद अंतर्संबंधों, समानताओं और भविष्योन्मुखी संभावनाओं का एक विस्तृत और सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.

Corresponding Author:
सैयद अब्दुल वाहिद शाह
Email: syadabdulwahid@gmail.com

1. परिचय

भारतीय शिक्षा प्रणाली सदैव से संस्कृति, परम्परा और आत्मबोध का उत्तम माध्यम रही है। देश के इतिहास में वैचारिक स्वतंत्रता और मौलिकता की खोज सदैव एक केंद्रीय विषय रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी लंबे समय तक भारत की शैक्षणिक संरचना पर औपनिवेशिक प्रभाव बना रहा, जिसने भारतीय मानस में अपनी संस्कृति और परंपराओं के प्रति एक प्रकार की हीनभावना और विस्मृति उत्पन्न की। इस वैचारिक शून्यता को भरने के लिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने 'एकात्म मानववाद' का दर्शन प्रस्तुत किया, जो न केवल राजनीतिक और आर्थिक बल्कि शैक्षिक पुनर्जागरण का भी मार्ग प्रशस्त करता है। वर्तमान में, भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) इसी 'भारत-केंद्रित' दृष्टिकोण को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में लागू करने का एक साहसिक प्रयास है।

2. एकात्म मानववाद: शैक्षिक दर्शन की दार्शनिक पृष्ठभूमि

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद (Integral Humanism) एक ऐसा संपूर्ण दर्शन है जो मनुष्य को खंडों में देखने के बजाय एक एकीकृत इकाई के रूप में स्वीकार करता है। (शर्मा, 2019) उनका तर्क था कि पश्चिमी विचारधाराएँ जैसे पूँजीवाद और समाजवाद मनुष्य को केवल एक 'आर्थिक प्राणी' या 'राज्य का साधन' मानती हैं, जिससे मनुष्य का सर्वांगीण विकास बाधित होता है। इसके विपरीत, भारतीय संस्कृति 'एकात्म' है जो जीवन के विभिन्न अंगों के बीच एकता की खोज करती है और उनमें समन्वय स्थापित करती है। शिक्षा के क्षेत्र में इस दर्शन का निहितार्थ यह है कि शिक्षण प्रक्रिया केवल मस्तिष्क को सूचनाओं से भरने तक सीमित न रहे, बल्कि वह मनुष्य के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा—इन चारों आयामों का पोषण करे।

2.1 पुरुषार्थ चतुष्टक और शिक्षा का उद्देश्य

पंडित उपाध्याय ने प्राचीन भारतीय दर्शन के चार पुरुषार्थों—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—का समर्थन किया और इन्हें शिक्षा के उद्देश्यों के साथ जोड़ा। उनके अनुसार, शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो मनुष्य को 'धर्म' (नैतिक कर्तव्य) के आधार पर 'अर्थ' (धन) और 'काम' (इच्छाओं) की पूर्ति करने में सक्षम बनाए, जिससे अंततः वह 'मोक्ष' (आत्म-साक्षात्कार) की ओर अग्रसर हो सके। (शर्मा, महेश चन्द्र 2018) जब तक ये चारों तत्व संतुलन में नहीं होंगे, मनुष्य चरम सुख और वैभव प्राप्त नहीं कर सकता।

मानवीय आयाम	पुरुषार्थ का संबंध	शैक्षिक उद्देश्य
शरीर	अर्थ	व्यावसायिक कौशल, शारीरिक स्वास्थ्य और भौतिक समृद्धि।
मन	काम	भावनात्मक संतुष्टि, कलात्मक अभिरुचि और मानसिक शांति।
बुद्धि	धर्म	विवेक, तर्कशक्ति, नैतिक निर्णय और सामाजिक कर्तव्य।
आत्मा	मोक्ष	आध्यात्मिक चेतना, आत्म-साक्षात्कार और सार्वभौमिक कल्याण।

सारणी संख्या 01

उपरोक्त सारणी का विश्लेषण दर्शाता है कि पंडित दीनदायाल उपाध्याय जी के लिए शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य को "मनुष्य" बनाती है, जिससे समाज, राष्ट्र और अंततः विश्व का निर्माण होता है।

2.2 चिति और विराट : राष्ट्रीय शिक्षा नीति की अंतर्निहित शक्ति

पंडित दीनदायाल उपाध्याय के दर्शन एवं राष्ट्र-चिंतन में 'चिति' और 'विराट' की अवधारणाएं अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के 'भारतीयता' के प्रति गौरव के भाव के साथ गहराई से जुड़ी हुई हैं। पंडित दीनदायाल उपाध्याय जी के अनुसार, “जिस प्रकार एक व्यक्ति का स्वभाव होता है, उसी प्रकार प्रत्येक राष्ट्र की भी एक अंतरात्मा होती है, जिसे उन्होंने 'चिति' कहा। (मित्तल एवं सतीष चन्द्र, 2016) 'चिति' ही वह कसौटी है जिस पर राष्ट्र के प्रत्येक कार्य और दृष्टिकोण का परीक्षण किया जाता है।” यदि कोई शिक्षा प्रणाली राष्ट्र की चिति के विरुद्ध है, तो वह राष्ट्र के पतन का कारण बनती है।

'विराट' वह सामूहिक ऊर्जा और शक्ति है जो राष्ट्र को क्रियाशील बनाती है और उसे गौरव के शिखर तक ले जाती है। उपाध्याय जी का मानना था कि विराट का जागरण ही विविधता में एकता को संघर्ष के बजाय पूरक संबंधों में बदल देता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मुख्य लक्ष्य भारत को एक 'वैश्विक ज्ञान महाशक्ति' के रूप में स्थापित करना है, जो वास्तव में भारतीय 'विराट' को जागृत करने की दिशा में एक मजबूत कदम है।

2.3 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : एक विखंडित ढांचे से समग्रता की ओर

स्वतंत्रता के 73 वर्षों बाद, 2020 में घोषित नई शिक्षा नीति भारतीय शिक्षा इतिहास में एक क्रांतिकारी कदम है। यह नीति 1986 की पुरानी नीति के स्थान पर लाई गई है और इसका उद्देश्य शिक्षा प्रणाली को 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप बदलते हुए भारतीय लोकाचार और मूल्यों से जोड़ना है। नीति के पाँच आधारभूत स्तंभ—पहुँच, समता, गुणवत्ता, सामर्थ्य और जवाबदेही—पंडित उपाध्याय के 'अंत्योदय' और 'सर्वोदय' के आदर्शों के साथ स्पष्ट सामंजस्य रखते हैं।

शैक्षणिक संरचना का पुनर्गठन NEP 2020 ने पारंपरिक 10+2 ढांचे को बदलकर 5+3+3+4 की एक नई शैक्षणिक संरचना प्रस्तावित की है, जो बच्चे के जीवन के प्रारंभिक वर्षों और उनके संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development) के वैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित है। (मानव संसाधन विकास मंत्रालय।, 2020). यह बदलाव पंडित उपाध्याय के उस विचार को पुष्ट करता है जहाँ वे 'सीखने' को रटने से अधिक महत्वपूर्ण मानते थे और व्यावहारिक ज्ञान पर बल देते थे। जिसे निम्न सारणी के माध्यम से सरलता से समझ जा सकता है।

शैक्षणिक स्तर	अवधि	मुख्य बिन्दु
1. बुनियादी (Foundational)	5 वर्ष (3-8 आयु)	खेल और गतिविधि आधारित शिक्षा, साक्षरता और संख्यात्मकता।
2. प्रारंभिक (Preparatory)	3 वर्ष (8-11 आयु)	संवादात्मक शिक्षण और विज्ञान-गणित का प्रारंभिक बोध।
3. मध्य (Middle)	3 वर्ष (11-14 आयु)	विषयों का अमूर्त परिचय और व्यावसायिक कौशल का आरंभ।
4. माध्यमिक (Secondary)	4 वर्ष (14-18 आयु)	आलोचनात्मक सोच, बहु-विषयक अध्ययन और विषयों का लचीला चुनाव।

सारणी संख्या 02

इस सारणी के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, न केवल शिक्षा को लचीला बनाती है, बल्कि यह पंडित दीनदायाल उपाध्याय जी द्वारा प्रतिपादित 'संपूर्ण मानव' के विकास के लक्ष्य की ओर अग्रसर करती है।

2.4 समग्र और बहु-विषयक शिक्षा: एकात्म मानववाद का प्रतिबिंब

पंडित दीनदायाल उपाध्याय ने विषयों के बीच की कठोर सीमाओं की आलोचना की थी और जीवन को एक एकीकृत समग्रता के रूप में देखने पर बल दिया था। उनका मानना था कि पश्चिमी विचारधाराओं ने ज्ञान को छोटे-छोटे खानों में विभाजित कर दिया है, जिससे व्यक्ति का दृष्टिकोण संकुचित हो गया है | राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 'समग्र और बहु-विषयक शिक्षा' (Holistic and Multidisciplinary Education) के माध्यम से इसी विभाजन को समाप्त करने का प्रयास करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 यह सुनिश्चित करती है कि विज्ञान, कला, वाणिज्य और व्यावसायिक धाराओं के बीच कोई कठोर अलगाव न हो। एक भौतिकी का छात्र संगीत भी सीख सकता है और अर्थशास्त्र के साथ योग का अध्ययन भी कर सकता है। यह दृष्टिकोण उपाध्याय जी के उस विचार का व्यावहारिक कार्यान्वयन है जिसमें उन्होंने कहा था कि मन को तृप्त करने वाली ललित कलाएँ और बुद्धि को तीक्ष्ण करने वाले विज्ञान के विषय मनुष्य को समाज के लिए अधिक उपयोगी बनाते हैं।

3. भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) का एकीकरण

पंडित दीनदायाल उपाध्याय जी ने सदैव स्वदेशी ज्ञान और विवेक को प्राथमिकता देने की वकालत की। वे मानते थे कि भारत के पास विज्ञान, स्वास्थ्य और सामाजिक प्रबंधन की एक समृद्ध विरासत है जिसे आधुनिक शिक्षा में स्थान मिलना चाहिए। NEP 2020 'भारतीय

ज्ञान प्रणालियों' (Indian Knowledge Systems) को मुख्यधारा के पाठ्यक्रम में शामिल करने का ऐतिहासिक निर्णय लेती है। (मानव संसाधन विकास मंत्रालय। (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार।) आयुर्वेद, योग, भारतीय गणित और खगोल विज्ञान जैसे विषयों को आज की समस्याओं, जैसे सतत विकास (Sustainable Development) और जलवायु परिवर्तन, के समाधान हेतु एक आधार के रूप में देखा जा रहा है। यह एकीकरण न केवल सांस्कृतिक गौरव को बढ़ाता है, बल्कि वैश्विक चुनौतियों के लिए एक भारतीय समाधान भी प्रस्तुत करता है।

3.1 मातृभाषा और भाषाई स्वाभिमान

भाषा और शिक्षा के संबंध में पंडित दीनदायाल उपाध्याय का दृष्टिकोण अत्यंत स्पष्ट था। उन्होंने तर्क दिया था कि अंग्रेजी भाषा का प्रभुत्व भारतीय राष्ट्र की आत्मा और उसकी 'चिति' के विरुद्ध है। उनके अनुसार, मातृभाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि यह संस्कृति का संवाहक है और बच्चे के मानसिक और बौद्धिक विकास के लिए सबसे स्वाभाविक माध्यम है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस विचार को दृढ़ता से लागू करती है और प्राथमिक स्तर पर (कम से कम कक्षा 5 तक) शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा या स्थानीय भाषा के उपयोग पर बल देती है। नीति यह मानती है कि बच्चे अपनी भाषा में अवधारणाओं को अधिक तेजी से और बेहतर ढंग से समझते हैं। यह भाषाई गौरव और सांस्कृतिक पहचान को पुनर्स्थापित करने की दिशा में पंडित दीनदायाल उपाध्याय जी के दर्शन की एक बड़ी जीत के रूप में देखा जा सकता है। जिसे निम्न तालिका के माध्यम से स्पष्ट किया गया है-

भाषाई पक्ष	पंडित दीनदायाल उपाध्याय का दृष्टिकोण	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रावधान
1. शिक्षा का माध्यम	मातृभाषा अनिवार्य होनी चाहिए।	कक्षा 5 (अधिमानतः कक्षा 8) तक मातृभाषा।
2. सांस्कृतिक गौरव	भाषा राष्ट्र की आत्मा की अभिव्यक्ति है।	भारतीय भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन।
3. बहुभाषावाद	कई भाषाओं का ज्ञान आवश्यक है।	त्रि-भाषा सूत्र का लचीला क्रियान्वयन।
4. शास्त्रीय भाषाएँ	संस्कृत जैसी भाषाओं का पुनरुद्धार।	संस्कृत को एक विकल्प के रूप में महत्व।

सारणी संख्या 03

3.2 व्यावसायिक शिक्षा और आत्मनिर्भरता (Swavlamban)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने शिक्षा को 'स्वावलंबन' का साधन माना। वह इस बात से चिंतित थे कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली केवल क्लर्क और बेरोजगार स्नातक पैदा कर रही है जो शारीरिक श्रम को हेय दृष्टि से देखते हैं उनके अनुसार, "चरित्र निर्माण और मस्तिष्क की शक्ति बढ़ाने के साथ-साथ शिक्षा ऐसी हो जिससे मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके" | (गुप्त, बजरंग लाल, 2007)

NEP 2020 इसी 'स्वावलंबन' के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education) के व्यापक एकीकरण का प्रस्ताव करती है। कक्षा 6 से ही छात्रों को विभिन्न शिल्पों जैसे बढ़ईगिरी, बिजली का काम, बागवानी आदि से परिचित कराया जाएगा और स्थानीय उद्योगों के साथ इंटर्नशिप की सुविधा प्रदान की जाएगी। "10 बैगलेस डेज़" कार्यक्रम छात्रों के मन से श्रम के प्रति संकोच दूर करने और उन्हें व्यावसायिक कौशल में दक्ष बनाने का एक अभिनव माध्यम है। यह पहल उपाध्याय जी के आत्मनिर्भर गाँव और विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था के सपने को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है |

3.3 मूल्य-आधारित शिक्षा और चरित्र का उत्थान

शिक्षा का मूल अर्थ केवल सूचनाओं का हस्तांतरण नहीं, बल्कि 'संस्कार' और 'चरित्र निर्माण' है। उपाध्याय जी का मानना था कि औपचारिक स्कूली शिक्षा और अनौपचारिक संस्कार शिक्षा का मिलन होना चाहिए ताकि व्यक्ति न केवल विद्वान बने बल्कि एक संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक भी बने। उन्होंने नैतिकता, करुणा, ईमानदारी और देशभक्ति को शिक्षा के अभिन्न अंगों के रूप में देखा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी 'मूल्य-आधारित शिक्षा' को प्राथमिकता देती है। नीति का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना है जिनमें न केवल उच्च-क्रम के संज्ञानात्मक कौशल (Higher-order Cognitive Skills) हों, बल्कि जो संवैधानिक मूल्यों, मानवाधिकारों और

पर्यावरण के प्रति भी सचेत हों। यह उपाध्याय जी के 'एकात्म व्यक्तित्व' की अवधारणा का ही आधुनिक स्वरूप है जहाँ बौद्धिक क्षमता और नैतिक शुचिता का समन्वय होता है।

3.4 सामाजिक जिम्मेदारी और अंत्योदय

पंडित दीनदायाल उपाध्याय जी के दर्शन का केंद्र 'अंत्योदय' था—अर्थात समाज के अंतिम पंक्ति के व्यक्ति का कल्याण। (स्वरूप, देवेन्द्र 1997, पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन, खण्ड-15,) शिक्षा के संदर्भ में इसका अर्थ था कि शिक्षा प्रत्येक वर्ग और सुदूर क्षेत्रों तक पहुँचनी चाहिए और वह समाज के सबसे कमजोर वर्ग के उत्थान का साधन बननी चाहिए। वे शिक्षा की दोहरी व्यवस्था (पब्लिक और सरकारी स्कूल) के विरोधी थे क्योंकि यह समाज में विभाजन और असमानता पैदा करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 'पहुँच और समता' (Access and Equity) के माध्यम से इसी अंत्योदय के विचार को क्रियान्वित करती है। नीति में 'सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों' (SEDGs) के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं ताकि भौगोलिक, सामाजिक या आर्थिक बाधाएं उनकी शिक्षा में बाधक न बनें। एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों (EMRS) का विस्तार और छात्रवृत्ति की नई प्रणालियाँ इसी दिशा में उठाए गए कदम हैं जो अंतिम व्यक्ति तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचाने के संकल्प को दोहराते हैं |

3.5 शिक्षक की प्रतिष्ठा और गुरु-शिष्य परंपरा का पुनर्जागरण

शिक्षा की पूरी प्रक्रिया में 'शिक्षक' की भूमिका सर्वोपरि है। पंडित दीनदायाल उपाध्याय के अनुसार, शिक्षक समाज का निर्माता है और छात्र उसका प्रतिबिंब। उन्होंने एक ऐसी व्यवस्था की कल्पना की थी जहाँ शिक्षक को समाज में सर्वोच्च सम्मान प्राप्त हो और वह केवल एक 'कर्मचारी' न होकर एक 'गुरु' और 'प्रेरक' की भूमिका में हो।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षकों को शिक्षा प्रणाली के केंद्र में पुनः स्थापित करने का प्रयास करती है。 नीति यह स्वीकार करती है कि कोई भी सुधार तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक कि शिक्षकों को सशक्त और स्वायत्त न बनाया जाए। शिक्षक प्रशिक्षण (Teacher Education) के लिए 4-वर्षीय एकीकृत बी.एड. डिग्री, निरंतर व्यावसायिक विकास (CPD) और योग्यता-आधारित पदोन्नति जैसे सुधारों का उद्देश्य शिक्षकों की गरिमा और व्यावसायिकता को बढ़ाना है (वर्मा, 2024) यह उपाध्याय जी के उस विचार से मेल खाता है जहाँ वे शिक्षक को समाज की प्रगति का 'मस्तिष्क' मानते थे।

3.6 तकनीकी विकास और मानवीय मूल्यों का समन्वय

पंडित दीनदायाल उपाध्याय तकनीक के विरोधी नहीं थे, परंतु वे तकनीकि के 'मानवीकरण' के पक्षधर थे। उनका मानना था कि तकनीकि को मनुष्य के व्यक्तित्व और समाज की चिति के अनुकूल होना चाहिए, न कि मनुष्य को तकनीकि का गुलाम बनना चाहिए। वह आधुनिक विज्ञान को भारतीय परंपराओं के साथ संतुलित करने पर जोर देते थे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तकनीकी एकीकरण (Digital Integration) को एक बड़े अवसर के रूप में देखती है। कोडिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), और डेटा एनालिटिक्स जैसे आधुनिक विषयों को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। परंतु साथ ही, नीति यह सुनिश्चित करती है कि तकनीक मानवीय मूल्यों और सांस्कृतिक जड़ों को न काटे। तकनीक का उपयोग 'पहुँच' बढ़ाने और 'व्यक्तिगत सीखने' (Personalized Learning) के लिए किया जा रहा है, जो उपाध्याय जी के प्रत्येक व्यक्ति के अद्वितीय विकास के विचार के साथ जुड़ता है |

4. शिक्षा का समाजीकरण: स्वायत्तता और उत्तरदायित्व

पंडित दीनदायाल उपाध्याय शिक्षा के "सरकारीकरण" के कट्टर आलोचक थे, उनका विचार था कि शिक्षा देने का कार्य समाज का मौलिक अधिकार और उत्तरदायित्व है, और सरकार को केवल सहयोग और संसाधनों की व्यवस्था करनी चाहिए। वह शिक्षा संस्थानों की 'स्वायत्तता' के समर्थक थे ताकि वे राजनीतिक उतार-चढ़ाव से मुक्त रहकर राष्ट्र निर्माण में योगदान दे सकें।

NEP 2020 शिक्षा व्यवस्था में 'हल्का लेकिन प्रभावी' (Light but Tight) विनियमन प्रस्तावित करती है, जो संस्थानों को शैक्षणिक और प्रशासनिक स्वायत्तता देने की बात करता है। नीति में 'परोपकारी निजी भागीदारी' को प्रोत्साहित करना और स्कूल परिसरों को 'सामुदायिक केंद्रों' के रूप में विकसित करना उपाध्याय जी के "शिक्षा समाज के लिए, समाज के द्वारा" के दर्शन का ही विस्तार है -

तुलनात्मक आयाम	पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में किए गए प्रावधान
1. मूल दर्शन	एकात्म मानववाद (शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा)।	समग्र और बहु-विषयक शिक्षा (Holistic Education)।
2. सांस्कृतिक आधार	चिति और विराट (भारतीय राष्ट्र की आत्मा)।	भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) और भारतीयता पर गौरव।
3. भाषा	मातृभाषा में शिक्षा अनिवार्य।	कक्षा 5 तक मातृभाषा/स्थानीय भाषा का उपयोग।
4. आर्थिक लक्ष्य	स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता।	व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास का एकीकरण।
5. सामाजिक न्याय	अंत्योदय (अंतिम व्यक्ति का उत्थान)।	वंचित समूहों (SEDGs) के लिए समानता और समावेश।
6. शिक्षक भूमिका	राष्ट्र निर्माता और समाज का मस्तिष्क।	शिक्षा प्रणाली का केंद्र और सम्मानित मार्गदर्शक।

सारणी संख्या 04

5. विश्लेषण : वैचारिक निरंतरता और भविष्य की राह

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचार और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मध्य तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि दोनों के बीच एक गहरी वैचारिक निरंतरता (Ideological Continuity) मौजूद है। पंडित दीनदायाल उपाध्याय ने 1960 के दशक में जो वैचारिक बीज बोए थे, वह आज NEP 2020 के रूप में एक व्यापक नीतिगत ढांचे के रूप में विकसित हुए हैं।

1. **वैचारिक वि-उपनिवेशीकरण (Decolonization):** पंडित दीनदायाल उपाध्याय जी के 'चिति' के विचार और NEP 2020 के 'भारतीयता' पर बल देने का मुख्य उद्देश्य भारतीय मानस को औपनिवेशिक दासता की मानसिकता से मुक्त करना है। (गुप्त, बजरंग लाल, 2007, पंडित दीनदयाल का आर्थिक चिन्तन) यह केवल पाठ्यक्रम बदलना नहीं है, बल्कि राष्ट्र के "स्व" (Self) को पहचानना है |

2. **एकात्मता बनाम विखंडन:** आधुनिक विश्व जिस विखंडित व्यक्तित्व (Fragmented Personality) और मानसिक तनाव का सामना कर रहा है, उसका समाधान एकात्म मानववाद में है। NEP 2020 द्वारा विषयों के समन्वय और कला-विज्ञान के एकीकरण का उद्देश्य एक संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण करना है जो इस आंतरिक विखंडन को समाप्त कर सके ।

3. **सतत विकास का भारतीय मॉडल:** पंडित दीनदायाल उपाध्याय जी ने 'संसाधनों के संतुलित उपभोग' और 'प्रकृति के साथ समन्वय' की बात की थी, NEP 2020 द्वारा पर्यावरण शिक्षा और प्राचीन भारतीय ज्ञान (जैसे आयुर्वेद और पारंपरिक खेती) को महत्व देना वास्तव में सतत विकास (Sustainability) का एक भारतीय विकल्प प्रस्तुत करता है |

6. निष्कर्ष

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचार और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक ही सिक्के के दो पहलू की तरह प्रतीत होते हैं—जहाँ एक सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है, वहीं दूसरा उसे क्रियात्मक रूप देता है। पंडित दीनदायाल उपाध्याय जी का 'एकात्म मानववाद' दर्शन शिक्षा को मनुष्य के सर्वांगीण उत्कर्ष का मार्ग मानता है, और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी मार्ग को आधुनिक 21वीं सदी की चुनौतियों के साथ जोड़ती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 यदि अपनी मूल भावना के साथ लागू हो जाती है, तो यह न केवल भारत के 'विराट' को जागृत करेगी, बल्कि दुनिया को एक ऐसी शिक्षा पद्धति का उदाहरण भी देगी जो भौतिक समृद्धि और आध्यात्मिक शांति के बीच संतुलन स्थापित करती है। पंडित दीनदायाल उपाध्याय ने जिस आत्मनिर्भर, गौरवशाली और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध भारत की कल्पना की थी, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उसी दिशा में एक मील का पत्थर है। अंततः, यह तुलनात्मक अध्ययन यह सिद्ध करता है कि भारत की प्रगति का मार्ग उसकी अपनी जड़ों में ही निहित है, और शिक्षा ही वह शक्ति है जो इस मार्ग को आलोकित कर सकती है।

References

[1]. शर्मा, विष्णु (2019) पंडित दीनदयाल उपाध्याय: जीवन और दर्शन (पृष्ठ सं0-112-134) नई दिल्लीः प्रकाशन विभाग।

[2]. गुप्त, बजरंग लाल, 2007, पंडित दीनदयाल का आर्थिक चिन्तन, सुरूचि प्रकाशन नई दिल्ली

[3]. मित्तल सतीष चन्द्र, 2016, युग पुरूष दीन दयाल उपाध्याय, कोशिकी प्रकाशन नई दिल्ली।

[4]. धर्मलिंगम, बी. (2024). दीनदयाल उपाध्याय का पुनरीक्षण: समकालीन भारतीय राजनीति के लिए एक ढाँचे के रूप में समग्र मानवतावाद। शोधकोश: जर्नल ऑफ विज़ुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स, 5(5), 1219–1226. https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v5.i5.2024.5157

[5]. कुमार, ए. (2021). नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020: भारत 2.0 के लिए एक रोडमैप। डब्ल्यू. बी. जेम्स, सी. कोबानोग्लू, और एम. कावुसोग्लू (संपादक), एडवांसेज इन ग्लोबल एजुकेशन एंड रिसर्च (खंड 4, पृष्ठ 1–8)। यूएसएफ एम3 पब्लिशिंग। https://doi.org/10.5038/9781955833042

[6]. मानव संसाधन विकास मंत्रालय। (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार। https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

[7]. रतना, पी., और ठाकुर, एच. के. (2023). राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का प्रभाव। अंतर्राष्ट्रीय बहुविषयक शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, पृष्ठ सं0- 13(9), 125।

[8]. एस0ए0यू0, एस. (2024). समग्र मानवतावाद: पंडित दीनदयाल उपाध्याय। अंतर्राष्ट्रीय समकालीन बहुविषयक अनुसंधान पत्रिका, पृष्ठ सं0- 3(1), 232-236।

[9]. उपाध्याय, दीनदयाल (1965). समग्र मानवतावाद। भारतीय जनसंघ।

[10]. उपाध्याय, दीनदयाल (1968). राजनीतिक डायरी। जैको पब्लिशिंग हाउस।

[11]. वर्मा, ए. (2024). भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक सैद्धांतिक विश्लेषण। एजीपीई अनुसंधान पत्रिका।

[12]. दुबे, एस0 (2020) भारतीय चिंतन और शिक्षा, लोक भारतीय प्रकाशन लखनऊ।

[13]. त्रिपाठी, आर0 (2017), एकात्मवाद और शिक्षा। जनरल आफ इण्डियन फिलोसफी, 29(2), पृष्ठ सं0-45-63।

Cite this Article:

सैयद अब्दुल वाहिद शाह एवं प्रोफेसर अनीता सिंह,"**पंडित दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचार एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक तुलनात्मक अध्ययन**", *Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT), ISSN: 3139-1656 (Online), Volume 2, Issue 2, pp. 23-29, February 2026.*

Journal URL: https://vijact.com

***DOI:** https://doi.org/10.65785/vijact.v2i2.15*